शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2013

आधुनिक हिन्दी साहित्य व दलित चेतना

अजित कुमार भारती
शोध छात्र, इतिहास विभाग
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक हिन्दी साहित्य के पद्य एवं गद्य भागों में वर्णित दलित चेतना से संबंधित साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्यकार कभी जो रंगशाला और रणशाला का एक साथ निरीक्षण करता रहा है, ज्ञान और प्रेम को महत्व देता रहा, कभी राम और कृष्ण के दरबारों में मस्तक झुकाता रहा, तो कभी कमनीय कान्ता कलेवर के वर्णन में अपने को धन्य मानता रहा। आधुनिक काल तक आते-आते एक नवीन शंखनाद का पुरोधा बन गया।

प्रस्तावना

भारत के नवजागरण काल के अग्रदूत भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र आधुनिक काल के युग प्रणेता साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य गगन पर अवतीर्ण हुए। उन्होंने न केवल स्वयं सामाजिक समस्याओं को अपनी साहित्य सर्जना का आधार बनाया अपितु समकालीन साहित्यकारों को भी युगीन समस्याओं के चित्रण हेतु प्रोत्साहित किया। "उन्होंने अपनी पूरी प्राण शक्ति से भारतवासियों में सामाजिक और राजनैतिक चेतना प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया। इससे भी बढ़कर उन्होंने सामाजिक चेतना में क्रान्ति लाकर भारतवासियों को स्वदेश प्रेम और स्वाभिमान सिखाया, उन्होंने गफलत से जगाया और स्वतंत्रता के बीज बोये।"1 भारतेन्दु जी इस यथार्थ से परिचित थे कि "साहित्य द्वारा समाज में जो परिवर्तन होता है वह तलवार द्वारा हुए परिवर्तन से कहीं स्थायी होता है।"2 राष्ट्रीयता के उदय से इस नवजागरण युग में सामाजिक सुधार परम्परागत रूढ़ियों का विरोध, नारी उन्नयन, अंग्रेजी अत्याचारों का विरोध दर्शाते हुए युगीन साहित्यकारों ने शोषितों, पीड़ितों, दलितों के प्रति गहरी सहानुभूति प्रदर्शित की है। देश का दलित वर्ग उनकी साहित्य सर्जना का केन्द्र बिन्दु बन गया। नवजागरण काल के प्रमुख कवि थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बद्रीनारायण चैधरी प्रेमधन, राधाचरण गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास जो प्रायः दलित वर्ग के प्रति हमदर्द रहे।

दलित चेतना

भारतेन्दु बाबू के पश्चात् भारतीय हिन्दी साहित्य को एक और युग प्रर्वत्तक साहित्यकार प्राप्त हुआ वे हैं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी। 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को प्रखर रूप से उद्घाटित किया। उनकी शिष्य परम्परा से आनेवाले मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' तो सच्चे अर्थों में भारत-भारती बन गयी। एक युगद्रष्टा

साहित्यकार के रूप में उन्होंने भारतीय समाज को आमंत्रण दिया - "हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे। अभी आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।"3 निश्चय ही द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने युगीन समस्याओं का पर्याप्त चित्रण अपने साहित्य में किया। उनकी दृष्टि दलित वर्ग की समस्याओं की ओर भी गयी। भारतीय समाज में व्याप्त जाति-पांति, छूआछूत, धनी-गरीब संबंधी मान्यताओं, कुरीतियों, रूढ़ियों पर इस युग के रचनाकारों ने प्रहार किए हैं। द्विवेदी युग के पश्चात् छायावादी युग अस्तित्व में आया जिसपर नव भारत से अधिक जुड़े होने के कारण दलित वर्ग की उपेक्षा का आरोप भी लगता रहा है, किन्तु ध्यान से देखने पर इस युग में भी 'दीनों-दलितों' की विपन्न स्थितियों का उनकी समस्याओं का चित्रण भी प्रचुरता से प्राप्त है।

छायावादोत्तर काल के प्रमुख वादों (प्रगतिवाद और प्रयोगवाद) में तो दलित वर्ग की समस्याएं ही मुखरित हुई हैं। शोषक के विरोध मंे जैसे सारा साहित्यिक समाज एक कतार में खड़ा हो गया है। दलितों की दीन-हीन अवस्था, शोषण, अत्याचार आदि से लेकर उनके द्वारा प्रतिशोधात्मक व्यवहार, मानसिकता और दलित चेतना का जागरण इस युग की प्रमुख धरोहर है। भारतेन्दु काल से लेकर प्रयोगवाद व नयी कविता की साहित्य यात्रा में काव्य धारा व गद्य धारा में समान रूप से 'दलित वर्ग' साहित्य संरचना के मूल में बना रहा है। काव्य के अतिरिक्त गद्य की विभिन्न विधाओं विशेषतः नाट्य व कथा साहित्य की मूल प्रेरणा 'दलित वर्ग' रहा है। प्रगतिवाद साहित्य तो दलित जीवन की जीती-जागती तस्वीर है।

हिन्दी काव्य धारा और दलित चेतना - आधुनिककालीन हिन्दी साहित्य स्पष्ट रूप से दो प्रमुख धाराओं में विभक्त माना जा सकता है। एक धारा है - आधुनिक हिन्दी काव्य धारा और दूसरी धारा है - आधुनिक हिन्दी गद्य धारा। यहां आधुनिक हिन्दी काव्य धारा जिसमें प्रमुख रूप से भारतेन्दु युगीन काव्य धारा, प्रयोगवादी काव्य धारा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए संबंधित काव्य धारा से दलित वर्ग की सम्बद्धता का उल्लेख प्रस्तुत स्तम्भ में किया जा रहा है।

1. भारतेन्दु युगीन काव्य धारा और दलित वर्ग

रीतिकालीन काव्यधारा जनजीवन से सर्वथा दूर थी। साहित्य और युग जीवन का संबंध लगभग टूट-सा चुका था। उसे पुनः जोड़ने का कार्य किया। भारतेन्दु जी ने रीतिकालीन रंग महलों की चहारदीवारी तोड़कर भारतेन्दुयुगीन कविता जन जीवन पथ पर अग्रसर हो चली। उनके लेखन का केन्द्र बिन्दु बना देश का दलित वर्ग जो युगों-युगों से शोषित, पीड़ित और उपेक्षित था। भारतेन्दु कालीन कवि समुदाय के सामने दो विपरीत धारायें उपस्थित थीं। एक ओर परम्परागत मूल्यों से चिपटी जन सामान्य की निष्ठा और दूसरी ओर नवीन क्रांतिकारी विचारों का सृजन जो सड़ी-गली मान्यताओं को ध्वस्त कर समाज के सर्वहारा शोषित, पीड़ित, युग उपेक्षित मानव को नवीन पथ दिखला सके। भारतेन्दु युगीन काव्य धारा जाति-पांति व रंग भेद को समाज के लिए अभिशाप मानती थी। "जाति एक सब नरन की जदपि विविध

त्यौहार।"4 आत्म-सम्मान से दीन-हीन दलित मानव यथार्थ चित्रण इस युग के प्रायः अधिकांश कवियों ने किया है। भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों मे से एक डा॔0 बालमुकुन्द गुप्त सम्पन्न वर्ग द्वारा "दलित वर्ग" के शोषण को अत्यन्त जघन्य मानते हैं। मानव, मानव की उपेक्षा कर रहा है, यह सोचकर उनका मन विद्रोह हो उठता है-

फिर भी क्या नंगे-भूखों पर दृष्टि न पड़ती होगी।

सड़क कूटनेवाले से तो आंख कभी लड़ती होगी।

कभी ध्यान में उन दुखियों की दशा भी लाते हो

जिनको पहरी गाड़ी घोड़े के पीछे दौड़ाते हो।5

सार रूप में कहा जा सकता है भारतेन्दु युगीन काव्य धारा ने कविता को राजमहलों से निकालकर जनसामान्य में प्रतिष्ठित किया। इस युग के कवियों के प्रयास से ही शोषित पीड़ित उपेक्षित मानव की व्यथा कविता का रूप धारण कर सकी। पहली बार 'दलित वर्ग' कविता का मूल बिन्दु बन सकता और दलित मानव का कार्यक्षेत्र में अस्तित्व प्रकाशित हुआ।

2. द्विवेदी युगीन काव्य धारा एवं दलित वर्ग

द्विवेदी युगीन काव्य धारा एक ओर वर्तमान के दुख-दर्द की अभिव्यक्ति है। वहीं गौरवमय अतीत की मधुर स्मृति भी। इस काव्य धारा में देश की विपन्न स्थिति के चित्रण के साथ शोषित पीड़ित मानवता का रक्त चूसनेवाली परतंत्रता का अंकन भी हुआ है। द्विवेदी युगीन काव्य धारा के प्रमुख कवियों में श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔंध, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहनलाल द्विवेदी तथा रामधारी सिंह 'दिनकर' के नाम उल्लेखनीय हैं। द्विवेदी युगीन कवि वर्ण-व्यवस्था एवं अस्पृश्यता को समाज विरोधीनी शक्ति मानता है। उसकी दृष्टि में अपनी हीनता छिपाने के लिए ही सवर्णों ने जातीय संस्तरण बना रखे हैं। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने वर्ण-व्यवस्था के माध्यम से जाति-पांति की आवश्यकता को नकारा है। "जाति! हाय री! वर्ण का हृदय क्षोभ से बोला कपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला.....जाति-पांति" रहते , जिनकी पूंजी केवल पाखण्ड: मैं क्या जानूं जाति जाति है ये मेरे भुजदण्ड।6 युगों-युगों से उपेक्षित अछूत (दलित वर्ग) से द्विवेदी युगीन रचनाकार को पूरी तरह सहानुभूति है। वह हिन्दूजनों के मनों में अस्पृश्यों के प्रति दया और प्रेम की भावना उत्पन्न करने का प्रयास कर रहा है। उसकी दृष्टि में अछूतों को मुख्य राष्ट्रीय जीवन धारा में मिला लेना ही हिन्दू समाज के लिए उचित है।

रहो न हे हिन्दू, संकीर्ण, न हो स्वयं ही जर्जर-जीर्ण

बढ़ो, बढ़ाओ अपनी बांह, करो अछूत जनों पर छांह।7

यद्यपि इस युग के अधिकांश कवि हिन्दू धर्म को महत्व देते थे तथापि धर्म के नाम पर अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों का प्रखर विरोध इन कवियों द्वारा किया गया है।

3. छायावादी काव्यधारा और दलित वर्ग

छायावाद काव्य में सतही तौर पर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि शायद यह काव्य युगीन हलचलों को प्रतिबिम्बित करने में असमर्थ रही है जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है। इस युग के कवियों ने मानव को अपने काव्य का विषय बनाकर उपेक्षित शोषित, पीड़ित, दीन-हीन, 'दलित मानव' के हृदय की व्यथा को काव्य का रूप दिया है। छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ हैं - पन्त, प्रसाद, निराला और महादेवी। इनके साथ ही डॉ राजकुमार वर्मा को गिना जा सकता है। इन सभी को यदि एकाकार रूप में देखा जा सके तो 'छायावादी' काव्य की प्रकृति स्पष्ट समझी जा सकती है तथा छायावादी काव्य धारा में दलित वर्ग की सम्बद्धता भी विश्लेषित की जा सकती है।

पन्त का छायावादी काव्य और दलित वर्ग - छायावाद के प्रमुख स्तम्भ सुमित्रानन्दन पंत का मानना है कि रूढियों और अंधविश्वासों के कुप्रभाव से ही जाति-व्यवस्था फलती-फूलती गयी। जाति-पांति के घातक विष अस्पृश्यता ने मानव जीवन के बीच अंतर स्थापित कर दिया है। जिसका सबसे अधिक दुष्परिणाम 'दलित वर्ग' को भोगना पड़ा। छायावादी कवि जानता है कि नगर संस्कृति से दूर 'दलित' गांवों में वास करता है। जहां जीवन की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो पाती। ग्रामीण अंचल में बसनेवाली 'भारत माता' के करोड़ों युवक, नग्न तन हैं, अर्ध क्षुधित हैं, शोषित हैं, दलित हैं।

तीस कोटि सन्तान नग्न तन

अर्ध क्षुधित, शोषित निरस्त्र जन

मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन

नत मस्तक

तरू तल निवासिनी।8

प्रसाद का छायावाद काव्य और दलित विमर्श - जयशंकर प्रसाद मानवतावादी विचारों से प्रभावित दलित वर्ग का चित्रण करने में उतने ही समर्थ रहे जितना अन्य उदात्त भावों का साधनहीन नग्न क्षुधातुर दीन दलित जीवन के प्रति करूणा से आपूरित कवि का हृदय द्रवित हो उठता है। वह श्रमजीवियों के 'पसीने भरे सीने से' लग जाना चाहता है। प्रसाद ने अनुभव किया कि समाज में शोषित-पीड़ितों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। उनके शोषण और दीनता की स्थिति प्रकट करने में शायद युगीन कवि की वाणी अपने को असमर्थ पाती है।

दीन दुखियों को देख आतुर अधीर अति करूणा के साथ उनके भी

साथ कभी रोते चलो,

थके श्रमजीवियों के पसीने भरे सीने लग जाने को सफल

करने के लिए सोते चलो।9

निराला का छायावादी काव्य और दलित वर्ग - छायावादी काव्यधारा के महान् कवि महाप्राण 'निराला' ने अपने काव्य में दलितों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की है। वह भव शाब्दिक नहीं है। दलित वर्ग की पीड़ा का उन्होंने निकट रूप से अनुभव किया है। दीनों-दलितों की पीड़ा के अमर गायक निराला ने 'दलित वर्ग' को अपने काव्य का विषय बनाने में जो तत्परता दिखाई है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। 'इलाहाबाद के पथ पर' पत्थर

तोड़नेवाली मजदूरनी का चित्र किसी एक मजदूरनी का चित्र नहीं है अपितु शोषित, सर्वहारा एवं सम्पूर्ण दलित वर्ग के प्रतिनिधि पात्र का चित्र है -

कोई न छायादार पेड़

वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

श्याम तन, भर बंध यौवन

नत नयन, प्रिय कर्म रत मन

गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार।10

निराला पीड़ितों, दलितों से हार्दिक संवेदना रखते हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनगिनत, असहायों, गरीबों और शोषितों की यथाशक्ति सहायता की। इस प्रयास में उनकी अपनी जिन्दगी लगभग एक 'दलित' की जिन्दगी बन गयी।

महादेवी वर्मा का छायावादी काव्य और दलित वर्ग - महादेवी वर्मा नारी हैं, कवियित्री हैं और वेदना की गायिका हैं। अतः उन्होंने समाज में अति 'दलित' जीवन जी रही नारी की व्यथा-कथा पूर्ण मनोयोग के साथ चित्रित की है।

छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ पन्त, प्रसाद, निराला, महादेवी निश्चय ही 'दलित वर्ग' का यथा स्थान चित्रण अपने काव्य में करते रहे हैं। इसी परम्परा में डा॔0 रामकुमार वर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है। 'एकलव्य' महाकाव्य के माध्यम से, अनादि काल से अज्ञान और अविद्या के अंधकार में भटकनेवाले शूद्रों, अस्पृश्यों की दलित स्थिति का चित्रण डा॔0 वर्मा ने किया है। उनका विचार है ज्ञान प्राप्ति किसी विशेष वर्ग का अधिकार नहीं है। सूर्य की किरण, अग्नि, वायु जिस तरह विशिष्ट जाति तक ही अपना प्रभाव नहीं छोड़ती, तो विद्या प्राप्ति पर दलित का हक क्यों नहीं है?

जाति भेद नहीं, वर्ग वंश भेद भी नहीं,

शिक्षा प्राप्त करने के सभी अधिकारी हैं।

सूरज की किरण भी क्या जाति भेद मानती है?

अग्नि क्या विशेष जीवधारियों की श्रेणी में

सीमित है और वायु की तरंग उठती

केवल विशिष्ट व्यक्तियों को सांस देने में?11

4. छायावादोत्तर संक्रमणकालीन (व्यक्तिपरक) काव्यधारा और दलित वर्ग

सामाजिक वैमनस्य और शोषण के जाल में पड़े हुए दीनों-दलितों की दीन-दशा को युगीन कवि ने गहराई से झांका, उसका सतरंगी कल्पना महल भर-भराकर गिर पड़ा। दूर एकाकी नील गगन की और ताकनेवाले कवियों को यथार्थ की धरती पर आना पड़ा। भारतीय समाज में बढ़ते हुए वर्ग संघर्ष ने समाज की पूंजीवादी और सर्वहारा वर्ग के रूप में विभक्त कर दिया। इसी सामाजिक, राजनैतिक विवशता के गर्भ से प्रगतिवाद का जन्म हुआ। तथापि इस अन्तराल में कवियों का एक वर्ग ऐसा भी रहा जो 'युगीन संक्रमण' की उपज था। वह प्रगति उन्मुख ही रहा था। किन्तु छायावादी प्रभाव से उसकी आसक्ति छूटी नहीं थी। इन कवियों में प्रमुख थे बच्चन, नरेन्द्र शर्मा अंचल और भगवतीचरण वर्मा।

इन कवियों ने अस्पृश्यों की उपेक्षा, सवर्णों द्वारा दलितों के बहिष्कार, अनादर, अवहेलना, अपमान, अत्याचार के अतिरिक्त कृषकों की असहाय दशा, शोषण, मजदूरों की हीन दशा, अन्न-वस्त्र और आवास की असुविधा व नारी उत्पीड़न, नारी की परवशता, विधवाओं की करूण व्यथा आदि पर लिखा तथा भाग्यवाद को नकारते हुए नए मूल्यों की प्रतिष्ठा को लेखनी का विषय बनाया है। संक्रमणकालीन काव्य धारा के सशक्त हस्ताक्षर भगवतीचरण वर्मा ने 'भैंसा गाड़ी' कविता में दलित वर्ग का अत्यन्त हृदयग्राही यथार्थ चित्रण किया है।

पशु बनकर नर पिस रहे जहां

नारियां जन रहीं हैं गुलाम

पैदा होना फिर मर जाना बस यह लोगों का एक काम12

5. प्रगतिवादी काव्यधारा और दलित वर्ग

प्रगतिवादी काव्यधारा एक प्रकारान्तर से 'दलित वर्ग' का जीवन्त प्रतिबिम्ब है। शोषक और शोषित दो वर्गों में विभाजित मानव समाज में वर्ग संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुंच रहा था। ऐसे समय प्रगतिवादी कविता का जन्म हुआ। फलतः किसानों, मजदूरों, असहायों, शोषित, दलितों की भावनाओं, उनकी व्यथाओं का तत्कालीन काव्य में जीवन्त चित्र प्राप्त होता है। प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवियों में डाॅ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन, डाॅ0 रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री, रांगेय राघव, गजानन माधव मुक्ति बोध, शमशेर बहादुर का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने शोषित, पीड़ित लोगों को अपनी कविता का आधार बनाया है। प्रगतिवादी काव्यधरा में दलित वर्ग का चित्रण बड़ी सफलता एवं बहुलता के साथ प्राप्त है। प्रगतिवादी काव्यधारा 'दलितों' का चित्रण शोषकों के प्रति घृणा तथा क्रान्ति द्वारा शोषण रहित समानता पर आधारित साम्यवाद की पक्षधर है। कवि अपनी प्रतिभा को पद दलितों के हित में नियोजित करना चाहता है।

6. प्रयोगवादी काव्यधारा और दलित वर्ग

हिन्दी साहित्य में, विशेष रूप से कविता के क्षेत्र में नित्य नवीन प्रयोग किये जाते रहे हैं, किन्तु प्रगतिवादी काव्यधारा के अस्तित्व में आने के बाद कुछ भिन्न प्रकार के शक्तिशाली प्रयोग हिन्दी कविता में देखने को मिले जिन्हें आलोचकों ने 'प्रयोग' तथा तत्कालीन काव्यधारा को प्रयोगवादी काव्य धारा के 'अभिधान' से अभिहित किया। यह विडम्बना ही है कि आलोचकों ने जिस काव्यधारा को प्रयोगवादी काव्यधारा कहा, उसके रचनाकार तक इस धारा के नामकरण से असंतुष्ट है। इस काव्यधारा के कवियों ने अधिनायक, देवदूत या मसीहा जैसे शब्दों की अवधारणा को नकार दिया। इसके पीछे उनका केवल एक ही तर्क था कि किसी भी मसीहा का अस्तित्व, लघु मानव (आम आदमी) की बलि पर प्रतिष्ठित होता है। अतः कविता का आधार 'लघु मानव' (साधरण आदमी) जिसे सर्वहारा अथवा दलित मानव कह सकते हैं, होना चाहिए।

वस्तुतः प्रयोगवादी कविता में ईश्वर के अस्तित्व को नकारा गया है क्योंकि इस धारा का कवि मानवीयता की सर्वोपरिता स्वीकारता है। अतः न

केवल ईश्वर अपितु उन सभी परम्पराओं, मूल्यों, व्यवस्थाओं अथवा चिन्तन पद्धतियों पर चोट की गयी है जो मानवीय प्रतिष्ठा को कम करती है। 'दलित वर्ग' जो 'लघु मानव' (आम आदमी) की अवधारणा के अधिक निकट है, प्रयोगवादी काव्यधारा का मूल बिन्दु बन गया। उसकी समग्रता, उसकी सम्पूर्णता, उसकी समरसता, उसकी स्वतंत्रता को रेखांकित करने का युगीन काव्य धारा प्रयोगवादी ने भरपूर प्रयास किया है। प्रयोगवादी कवि 'दलित वर्ग' में जागी हुई नवीन-चेतना को पहचान सका है। अपनी अस्मिता व चेतना के बल पर यह वर्ग शान्ति का पथ अपनाकर मुक्ति प्राप्त करने को तत्पर है।

डॉ धर्मवीर भारती के शब्दों में -

ठहरो! ठहरो! ठहरो! ठहरो! हम आते हैं

हम नयी चेतना के बढ़ते अविराम चरण

हम मिट्टी की अपराजित गतिमय संतानें

हम अभिशापों से मुक्त करेंगे कवि का मन14

7. नयी कवता-काव्य धारा और दलित वर्ग

प्रायः 1960 के पश्चात् जो काव्यधारा अस्तित्व में आयी उसे हिन्दी साहित्य में 'नयी कविता' का नाम दिया गया। यह कविता बदले सामाजिक मूल्यों और संदर्भों को रेखांकित करती है। नयी कविता को 'तीसरा सप्तक' प्रतिनिधित्व देता है। जिसके प्रमुख कवियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, दुष्यंत कुमार, कैलाश वाजपेयी आदि ने 'दलित-वर्ग' के चित्रण में यथेष्ट रूचि प्रदर्शित की। वर्ण-व्यवस्था एवं अस्पृश्यता, अस्पृश्यों का शोषण उपेक्षा, अपमान और अत्याचारों का चित्रण करना इन कवियों का प्रमुख 'करणीय' रहा है। किसान मजदूर जो सदियों से निराश्रय, उपेक्षित एवं अपमानित है, इस काव्य धारा का 'मूल बिन्दू' बन गए हैं। नयी कविता के मन में सुदृढ़ आशावाद है। उसका मानना है कि 'दलित वर्ग' भले ही शोषण, उत्पीड़न की चक्की में पिसता-कराहता रहे किन्तु एक न एक दिन वह कामयाब अवश्य होगा अपने भावी जीवन में।

फिर भी हमारा अटल विश्वास है

कि खाली जेबंे

खाली जेबें, पागल कुत्ते और वासी कविताएं लेकर

नक्शा बदल देंगे आज के जमाने का15

प्रतिष्ठित लेखक कन्हैयालाल चंचरीक की मान्यता है कि सभी प्रगतिवादी प्रयोगवादी कवि उच्च जातियों के हैं। इनकी दलितों के प्रति हार्दिक हमदर्दी तो है लेकिन समाज के ठेकेदारों, योजनाकारों, नौकरशाहों तथा नेतृत्व वर्ग जो अंग्रेजी दां है और ब्रिटिश शासन-व्यवस्था की संतान है, साथ ही सामंतवादी चरित्र का है। उनपर इन कवियों का शायद ही प्रभाव पड़ा हो।

हिन्दी गद्य धारा और दलित चेतना

उन्नीसवीं शताब्दी के आस-पास अनुकूल सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियां पाकर काव्यधारा के साथ-साथ हिन्दी में गद्य साहित्य का लेखन प्रारम्भ हुआ। यद्यपि इस समय हिन्दी और उर्दू की आपसी टकराहट ने हिन्दी गद्य के विकास में अनेक व्यवधान उपस्थित किये किन्तु हिन्दी गद्य धारा का प्रवाह रूका

नहीं। अंग्रेजों ने सम्पर्क से भारतीय जन-जीवन में नवीन चेतना का संचार हुआ। पाश्चात्य शिक्षा एवं ज्ञान के सम्पर्क में आने से प्राचीन मान्यताओं में विघटन प्रारम्भ हुआ और नवीन जीवन मूल्य स्थापित हुए। ईसाई मिशनरियों ने भी खड़ी बोली को प्रचार का माध्यम बनाया। हिन्दी गद्य धारा प्रवाह निम्न भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. भारतेन्दु युगीन गद्य धरा (1850 से 1900)

2. द्विवेदी युगीन गद्य धरा (1900 से 1919)

3. छायावाद गद्य धरा (1919 से 1936)

4. छायावादोत्तर गद्य धरा (1936 से अद्यावधि)

1. भारतेन्दु यगीन गद्य धारा और दलित वर्ग - भारतेन्दु युगीन गद्य धारा का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि इस युग को प्रथम बार हिन्दी साहित्य की सेवा करने का श्रेय प्राप्त है। साथ ही इसने एक लेखक मण्डल भी तैयार किया जिसके प्रमुख लेखकगण थे - पं0 प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण, चैधरी, प्रेमधन, ठाकुर जगमोहन सिंह, पं0 बालकृष्ण भट्ट आदि। भारतेन्दु युग में गद्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य रचना हुई। निबंध, एकाकी, नाटक, इतिहास, जीवन चरित के अतिरिक्त उपन्यास का अनुवाद एवं उनकी मौलिक रचना भी की गयी।

वास्तव में स्वातंत्रय पूर्व के राजनैतिक कर्णधार अथवा साहित्यकारों के लेखन व विचार का मुख्य बिन्दु राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति पर केन्द्रित रहा करता था। समाज की अन्य समस्याओं को गौण तथा स्वतंत्रता प्राप्ति को प्रथम वरीयता दी जाती थी। 'दलित वर्ग' की समस्याओं को स्वर देने का शायद इस युग के साहित्यकार को अवकाश ही नहीं था। दूसरी ओर यह आरोप भी इस युग के साहित्यकारों पर किया जाता है कि प्रायः उच्च वर्ग से संबंध्ति होने के कारण युगीन साहित्यकारों ने दलित समस्याओं के प्रति उदासीनता प्रदर्शित की है।

2. द्विवेदी युगीन गद्य धारा और दलित वर्ग - द्विवेदी युगीन गद्य धारा को प्रमुख रूप से प्रवाहित करने का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को है। हिन्दी साहित्य को 'सरस्वती' जैसी ज्ञान पत्रिका देकर उन्होंने अपने साहित्य-कर्म का जिस तरह निर्वाह किया उसकी समता कठिनता से ही मिलती है।

द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों ने अंग्रेजों के शोषण चक्र के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की और अपनी रचनाओं में जनाक्रोश को अभिव्यक्ति दी। साम्राज्यवादी शासन तंत्र के शोषक तरीकों के कारण जो गरीब पहले से कर्जदार थे, वे और दुःख और पीड़ित होते रहे। सर्वहारा वर्ग महाजनों की साजिश का शिकार तो था ही साथ ही वह अपने पैतृक धं◌ाधे को त्यागकर मजदूरी के लिए शहर की ओर बढ़े। वहां भी मजदूर के नाम पर उनका पर्याप्त शोषण ही होता था। द्विवेदी युगीन "साहित्यकारों ने पूंजी बढ़ानेवाले पूंजीपतियों का खुलकर विरोध किया है और पूंजीपतियों के अन्यायों और अत्याचारों की खूब भत्र्सना की है।"16 इस प्रकार दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति का स्वर द्विवेदी युगीन कहानियों और उपन्यासों में अंशतः ही देखा जा सकता है।

3. छायावादी गद्य धारा और दलित वर्ग - परम्परागत भारतीय संस्कृति में जीवन-दर्शन, धर्मशास्त्र एवं सामाजिक रूढ़ियों का सन्निवेश रहता था। सम्पूर्ण मानव जीवन धर्म के नाम से समावेष्टित था किन्तु वर्तमान भारत की सांस्कृतिक चेतना में विज्ञान की अभूतपूर्व भूमिका दिखाई देती है। परिणामतः समाज में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों एवं अंधविश्वासों के प्रति विरोध जन्मा है। दलन और शोषण पर आधारित सृष्टि को छायावादी साहित्यकार ईश्वरीय सृष्टि नहीं स्वीकारता। 'कायाकल्प' उपन्यास के एक पात्र वक्रधर की दृष्टि में "यह कौन सा इंसाफ है कि कोई तो दुनिया में मजे उड़ाये और कोई धक्के खाये। एक जाति दूसरी जाति का रक्त चूसे और मूंछों पर ताव दे, दूसरी कुचली जाए और दानों को तरसे। ऐसा अन्यायमय संसार ईश्वर की सृष्टि नहीं हो सकती।"17

द्विवेदी युगीन गद्य धारा को प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में 'दलित वर्ग' का जीवन चित्रित कर समृद्ध किया। 'ठाकुर का कुआं' दलित वर्ग की विवशताओं का सही चित्र प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। यह कहानी प्रदर्शित करती है कि प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं पर भी दलित का अधिकार बाधित किया गया। सार रूप में कहा जा सकता है कि छायावादी गद्य धारा दलितों के प्रति सहानुभूति पूर्ण रही है। विशेष तौर से प्रेमचन्द ने तो अपने लेखन का मुख्य आधार ही शोषित, पद दलित, निरीह जनता को ही बनाया। प्रेमचन्द, यशपाल, नागार्जुन, जैनेन्द्र, अज्ञेय आदि साहित्यकारों ने दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति दर्शायी है और उनकी समस्याओं का बेबाक चित्राण किया है।

4. छायावादोत्तर गद्य धारा और दलित वर्ग - 1936 ई0 के बाद का काल हिन्दी गद्य साहित्य में छायावादोत्तर काल के नाम से जाना जाता है। यह वह युग है जिसमें हिन्दी गद्य की सर्वांगीण उन्नति हुई। भारत ने पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्रता के सुखद-स्फूर्तिदायक वातावरण में सांस ली। गद्य जनजीवन की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन बन गया। हिन्दी नाटक, कथा साहित्य, निबंध, आलोचना के अतिरिक्त जीवन वृत्त, आत्मकथा, यात्रा वृत्त, रिपोर्टाज, गद्य काव्य, संस्मरण आदि का पर्याप्त विकास इसी काल में हुआ। नाटक के क्षेत्र में सेठ गोविन्ददास, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, जगदीश चन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश छायावादोत्तर युग के यशस्वी व्यक्तित्व हैं।

कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में विशेष प्रयोगधर्मिता इस काल में दृष्टिगोचर होती है। आज की पीढ़ी का जीवन संघर्ष, आकांक्षाएं, आशाएं, कुंठाएं विद्रोह तथा नवीन जीवन मूल्यों की तलाश पर छायावादोत्तर कथा साहित्य का ताना-बाना रचना बुना गया है। जैनेन्द्र, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, धर्मवीर भारती, यशपाल, अमृतलाल नागर, राजेन्द्र यादव, भैरव प्रसाद गुप्त आदि ने इस युग के कथा-साहित्य को समृद्ध किया है।

सांस्कृतिक, वैयक्तिक तथा सामयिक विषयों पर विचारात्मक दार्शनिक, भावात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक और समीक्षात्मक निबंध इस काल में

लिखे गये। हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, विद्यानिवास मिश्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, वासुदेव शरण अग्रवाल, महादेवी वर्मा, गुलाबाय, डा॔0 सम्पूर्णानन्द, हरिशंकर परसाई इस युग के विशेष उल्लेखनीय निबंधकार हैं।

हम छायावादोत्तर गद्य साहित्य को दलित वर्ग के परिपेक्ष्य में देखते हैं तो पाते हैं कि प्रमुख रूप से कथा साहित्य (कहानी और उपन्यासों) में दलितों के समस्याग्रस्त जीवन को चित्रित कर उनमें विद्रोही चेतना को उभारा गया है। फणीश्वरनाथ रेणु की 'मैला आंचल' तथा नागार्जुन की 'परती परिकथा' 'बलचनमा' आदि ऐसी ही रचनाएं हैं। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा कि हिन्दी का गद्य साहित्य 'दलित वर्ग' के चित्रण की दृष्टि में पद्य साहित्य की तुलना में अधिक समृद्ध है। गद्य में दलितों की व्यथा, वेदना, पीड़ा एवं समस्या को बहुत ही अच्छी तरह चित्रित किया गया है।19

कथा अथवा साहित्य का ध्येय जन जीवन का चित्रण करना, शोषण अथवा दासता के विरूद्ध छेड़े गये जनता के संग्राम में उसका हस्ताक्षर होना जरूरी है। इस दृष्टि से जब किसी साहित्यकार को मापते हैं तो स्वीकार करना पड़ता है कि सच्चा साहित्यकार की दृष्टि समतामूलक होती है। वह समाज में समता, समानता और अविरोधत्व के मूल्य स्थापित करना चाहता है और इसी में उसकी रचना-धर्मिता की सपफलता निहित है। जब हम दलित वर्ग के साथ इस समय मूलक दृष्टि की उपस्थिति का आकलन करते हैं तो हमें प्रायः परम्परागत साहित्य में निराशा ही हाथ लगती है। इस संदर्भ में जयप्रकाश 'कर्दम' ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं "परम्परागत हिन्दी साहित्य ने समता, स्वतंत्रता और बंधुता के मूल्यों की प्रायः उपेक्षा की है।"19

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य एवं रीतिकालीन हिन्दी साहित्य की अपेक्षा आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रायः 'दलित वर्ग' को साहित्य चेतना का प्रमुख प्रतिपाद्य बनाया गया है। भारतेन्दु काल से लेकर अद्यावधि तक हिन्दी साहित्य दलित समस्याओं के चित्रण में सतत् में सचेष्ट रहा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रायः दो विभाग किये गये हैं - काव्यधारा एवं गद्य धारा। आधुनिक व्यवस्था के युगानुकूल अनेक विभाग दृष्टिगोचर होते हैं जिन्हें क्रमशः भारतेन्दु युगीन काव्य, द्विवेदी काव्यधारा, छायावादी काव्यधारा, छायावादोत्तर व्यक्तिपरक काव्यधारा, प्रगतिवादी काव्यधारा, प्रयोगवादी काव्यधारा, नयी कविता काव्यधारा के रूप में देखा जा सकता है।

भारतेन्दु युगीन काव्य धारा में दलित वर्ग की समस्याओं का अंशतः उल्लेख है। किन्तु सुधार भावना से प्रेरित होकर परम्परागत रूढ़ि, अंधविश्वास, अस्पृश्यता, बाह्य आडम्बरों का इस कविता में घोर-विरोध हुआ है। द्विवेदी युगीन काव्यधारा भी भारतेन्दु युगीन कविता के समान ही लोक जीवन की अभिव्यक्ति थी। अतः दलित वर्ग की प्रमुख समस्या, अस्पृश्यता, अंध विश्वास आदि का जोरदार शब्दों में खण्डन करके दलित जनों को हिन्दू समाज का अविभाजित अंग स्वीकारा गया है।

छायावादी कविता मूलतः अन्तर्मुखी और वैयक्तिक चेतना से सम्पन्न है। अतः छायावादी कविता रूढ़ परम्पराओं, रीति-रिवाजों एवं बंधनों

के विरुद्ध विद्रोह की कविता है। छायावादी कवियों का मानव विषयक दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने सम्पूर्ण मानव को एक आरूढ़ मानव के रूप में ग्रहण किया। डॉ रामविलास शर्मा के शब्दों में, प्रकृति प्रेम, विश्व-बंधुत्व, नारी के सम्मान की प्रतिष्ठा अतीत पर गर्व और सामन्तवादी रूढ़ियों के विरुद्ध व्यक्ति के गौरव की घोषणा। यह छायावाद का सबल पक्ष है। उसने उस भाव जगत् को बदल दिया जो सामन्ती संस्कारों की नींव पर खड़ा हुआ था।20

दलित वर्ग के जीवन की विसंगतियों का चित्रण करते हुए छायावादी कविता उसे समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत रही है। छायावादोत्तर काल की कविता को अपनी जीवन- अनुभूतियों के रूप में अभिव्यक्ति देनेवाले कवियों के बच्चन, अंचल, नरेन्द्र शर्मा, भगवती चरण वर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने लोक जीवन से निकटता के कारण शासकीय और सामाजिक बंधनों को अनुपयोग और अनावश्यक माना। प्रायः संक्रमणकालीन इस कविता में दयनीय सामाजिक व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश और कुंठा के दर्शन होते हैं।

प्रगतिवादी कविता क्रांति की परिवर्तन की कविता है। इस काव्य ने सामाजिक आवश्यकताओं की सम्पूर्ति का बौद्धिक प्रयास करते हुए ध्वस्त परम्परा के विरुद्ध विद्रोह प्रकट किया है। इस धारा के अधिकांश कवि माक्र्स के द्वंदात्मक भौतिकवादी दर्शन से प्रभावित हैं। दलित वर्ग के प्रति इनकी स्वाभाविक निष्ठा और सहानुभूति है। इसके विपरीत शोषक वर्ग के प्रति घोर वितृष्णा प्रगतिवादी काव्य में सर्वत्र विद्यमान है।

प्रयोगवादी कविता का प्रारम्भ अज्ञेय के 'सप्तक' के प्रकाशन के साथ प्रारम्भ होता है। वैयक्तिक यथार्थ को शब्दायित करने का कार्य प्रयोगवादियों द्वारा किया गया है। उनकी जीवन दृष्टि आधुनिक है। पश्चिम का प्रभाव और भारतीय परिस्थितियों की सम्मिलित परिस्थितियों की उपज प्रयोगवाद है किन्तु 'दलित जीवन' की समस्याओं को उकेरने में कोई कृपणता इन कवियों द्वारा नहीं की गयी है।

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद बिना नकारे हुए उसको परिष्कृत रूप देते 'नयी कविता' का अस्तित्व प्रकाश में आया। "नया काव्य युग के बौद्धिक आन्दोलन को वाणी दे रहा है। यथार्थ जीवन का चित्रण करने में 'नयी कविता' बेईमानी नहीं करती।"21 वर्ण-व्यवस्था एवं अस्पृश्यता, अस्पृश्यों के मूल वण्र्य विषय हैं। नयी कविता के कवियों ने कृषकों की असहायता, शोषण, अन्न-वस्त्र, आवास की समस्या का अंकन करके युगीन कवि धर्म का सफल निर्वाह किया है। नारी जो युगों-युगों से उपेक्षिता एवं दलितों में भी दलित है उसे इन नयी कविता में स्थान प्राप्त हुआ है। नई कविता प्रयोग से बाहर निकलकर सामाजिक भाव-भूमि पर स्थित हो गयी है और आज भी ज्वलंत समस्या 'दलित' को अपना विषय बनाकर उसकी हर व्यथा का तीव्रता से अंकन कर रही है। इन कवियों में डा॰ पदम सिंह शर्मा कमलेश, वीरेन्द्र मिश्र, सुयोगी, घनश्याम अस्थाना, कन्हैयालाल चंचरीक, अजित कुमार, देवेन्द्र शर्मा इन्द्र, जयप्रकाश चतुर्वेदी प्रमुख हैं।

हिन्दी गद्य धारा के रूप में भारतेन्दुयुगीन गद्य धारा, द्विवेदी युगीन गद्य धारा, छायावादी गद्य धारा और छायावादोत्तर गद्य धारा प्रायः

यथार्थवादी चेतना से अनुप्राणित है। अतः भारतेन्दु युगीन गद्य में स्वतंत्रता की प्राप्ति और सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वासों में मुक्ति का विशेष आग्रह विद्यमान है। द्विवेदी युगीन गद्य धारा में पूंजीपतियों का विरोध एवं शोषितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की गयी है।

छायावादी गद्य धारा में कथा साहित्य (कहानी और उपन्यासकार) रचना के प्रमुख आधार स्तम्भ रहे। गांधीवाद से प्रभावित मुंशी प्रेमचन्द तो युगों-युगों से शोषित, पीड़ित-दलितों के सशक्त प्रवक्ता बन गये। उन्होंने परम्परागत सामाजिक विधानों, अंधविश्वास, अस्पृश्यता व ऊँच-नीच की भावना का खुला विरोध किया। 'दलित चेतना' को जागृत कर 'दलितों' को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का पुरजोर प्रयास कहानियों एवं उपन्यासों में दिखाई देता है। 'कर्मभूमि' का समरकान्त स्पष्ट कहता है "मैं जात-पात नहीं मानता। माताजी एक सच्चा चमार भी तो आदर के योग्य है, जो दगाबाज, झूठा, लम्पट हो, वह ब्राह्मण भी तो आदर के योग्य नहीं।"22

छायावादोत्तर गद्य धारा में भी कहानी और उपन्यासों की बहुलता है जिन्होंने दलित जीवन की त्रासदी, दलितों पर होनेवाले अमानुषिक अत्याचारों का रेखांकन करते हुए समाज के सामने उनकी समस्याओं का निराकरण प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि दलित समस्याओं का चित्रण हिन्दी काव्य की अपेक्षा, गद्य में अधिक उत्कर्षपूर्ण रहा है।

सन्दर्भ

1. खण्डेलवाल, डॉ जयकिशन प्रसाद : हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ 413

2. राय, डॉ गुलाब: काव्य के रूप, आत्माराम प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृष्ठ 7

3. गुप्त, मैथिलीशरण: भारत-भारती, साहित्य सदन, दिल्ली, 2007, मुख्य पृष्ठ से

4. मिश्रा, भारत: भारतेन्दु ग्रन्थावली: द्वितीय खण्ड, नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008, पृष्ठ 700

5. गुप्त, बाल मुकुन्द: निबंधवली, प्रथम भाग, पृष्ठ 624

6. दिनकर, रामधरी सिंह: रश्मिरथी: प्रथम सर्ग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 15

7. गुप्त, मैथिलीशरण: गांवों का सुधर - हिन्दू, पृष्ठ 111

8. पन्त, सुमित्रानन्दन: भारतमाता/ग्राम्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ 43

9. प्रसाद, जयशंकर: तुम/झरना, पृष्ठ 41

10. निराला: तोड़ती पत्थर/अपरा, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृष्ठ 130

11. वर्मा, डा॰ रामकुमार: एकलव्य, पृष्ठ 66

12. वर्मा, भगवती चरण: भैंसा गाड़ी/विस्मृति के पफूल, पृष्ठ 103

13. 'सुमन', शिवमंगल सिंह: आश्वासन/पर आंखें नहीं भरी, पृष्ठ 23

14. भारती, डा॰ धर्मवीर: अनजान पग ध्वनियां/ठण्डा लोहा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1952, पृष्ठ 56

15. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल: काठ की ध्वनियां: तीसरा सप्तक, पृष्ठ 25

16. पाण्डेय, डाॅ विजयलक्ष्मी: प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ 109

17. प्रेमचन्द: कायाकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृष्ठ 221

18. वास्कर, डाॅ आनन्द: हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, पृष्ठ 68

19. कर्दम, जयप्रकाश: परम्परागत हिन्दी साहित्य और दलित चेतना, पृष्ठ 75

20. शर्मा, डाॅ रामविलास: आलोचना (यथार्थवाद विशेषांक), सम्पादकीय, पफरवरी, 1959, पृष्ठ 198

21. वास्कर, डाॅ आनन्द: हिन्दी साहित्य में दलित चेतना, पृष्ठ 71

22. प्रेमचन्द: कर्मभूमि, भूमिका प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 146